International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(2): 40-41

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(2): 40-41
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-01-2016
Accepted: 04-02-2016

डॉ0 कमलकान्त मिश्र
प्रवक्ता 'हिन्दी' पं0 हरि सहाय पी0जी0 कालेज जैती बेलघाट गोरखपुर

Correspondence
डॉ0 कमलकान्त मिश्र
प्रवक्ता 'हिन्दी' पं0 हरि सहाय पी0जी0 कालेज जैती बेलघाट गोरखपुर

गिरिराज किशोर की कहानियों में दलित चेतना

डॉ0 कमलकान्त मिश्र

भारतीय समाज प्राचीन काल से ही वर्णों में विभाजित है। उस समय वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर कर्म पर आधारित थी। क्रमशः समाज में आये ह्रास के परिणाम स्वरुप वर्ण व्यवस्था जन्म अर्थात कुल परिवार पर आधारित हो गई इस तरह भारतीय समाज में अमानवीय अछूत परम्परा का प्रचलन प्रारम्भ हो गया।

दलित शब्द का अर्थ – रौदा गया, कुचला, दबाया हुआ, पदाक्रांत, खंडित, विनष्ट से है। अंग्रेजी का डिस्प्रेड दलित का समानार्थी है।[1] अवन्तिका प्रसाद भरभट ने दलित को इस शब्द से परिभाषित किया है – ''जिसका दलन हुआ हो अथवा जिसे पनपने न दिया गया हो, ध्वस्त या नष्ट किया गया हो।''[2] दलित शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ0 सोहन पाल सुमनाक्षर कहते है – ''दलित वह है जिसका दलन किया गया हो उपेक्षित, अपमानित, प्रताड़ित, बाधित और पीड़ित व्यक्ति दलित की श्रेणी में आते हैं। साथ ही दलित शब्द आक्रोश, चीख, वेदना, पीड़ा, चुभन और छटपटाहट का प्रतीक है।''[3]

दलितों की दयनीय स्थिति को कथित मनुवादी लोग पुनर्जन्मवाद, भाग्यवाद, अंधविश्वास और अपौरुषेय तर्कों से जोड़ दिया। इस साजिश पूर्ण व्यवस्था के कारण दलितों के प्रति व्यापक और पथरीली संवेदनहीनता निर्मित हुई। ऊँची और सवर्ण जातियों के लोग अवर्णों के लिए दुःख का कारण बनते गये। सवर्ण लोग जाति की दुहाई देकर बिना दूसरे की इज्जत किये आप इज्जतदार बने रहना चाहते हैं। बिना हमदर्दी दिये सब कुछ प्राप्त कर लेना चाहते हैं।

समाज का वह हिस्सा जिसका शोषण हो रहा है। जिस पर लोग अत्याचार करने को अभ्यस्त हों। सामाजिक सन्दर्भों में एक वर्ण द्वारा जिस वर्ण के जीवन का शोषण हो। जीवन की सुख–सुविधाओं व अन्य साधनों से वंचित रखा जाये, दलित या अछूत कहा जाता है।

दलित चेतना मूलतः व्यवस्था के तहत जारी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दमन के प्रतिरोध और प्रतिकार की चेतना है।[5] जब व्यक्ति और परिवार अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्षरत हो तो समाज उस संघर्ष से कैसे वंचित रह सकता। जातिय भेद से गठित दलितों का समाज सवर्णो के समाज से अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत है।

भारतीय समाज में दलित कभी मुख्यधारा में नहीं रहे उनको मुख्य धारा में रहने नहीं दिया गया। इस कारण वे सदैव हाशिए पर रहे। उन्हें हाशिए पर सीमित रखने के लिए घृणा और शोषण के मानसिक अस्त्रों का प्रयोग अत्याचार की सीमा से भी बढ़कर किया गया। विकसित होते समाज में अपेक्षाएँ और इच्छाएँ वेगवती नौकाएँ हो जाती है।

20वीं सदी में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले तथा महात्मा गाँधी आदि लोक नायकों ने दलित को मनुष्य समझे जाने की तथा उन्हें समाजिक जीवन में स्थान दिलाने के लिए आन्दोलन चलाया। डॉ0 भीम राव अम्बेडकर ने पीने के पानी पर बराबर अधिकार का दावा किया तथा मन्दिरों में पूजा– अर्चना में बहिष्कार का विरोध कर मन्दिरों में प्रवेश की बात उठाई । इन लोक नायकों के अथक ऐतिहासिक प्रयास से वर्तमान राजनैतिक, शिक्षा समाज व साहित्य में इनको स्थान प्राप्त हो सका। वर्तमान साहित्य इस वर्ग आन्दोलन से अछूता नहीं रहा। इस परिदृश्य में साहित्य में दलित चेतना की लहर दौड़ पड़ी। लेखक और आलोचक सभी दलित चेतना को नई दृष्टि और सृष्टि देने लगे।

समकालीन साहित्यकार गिरजा किशोर के कहानियों में 'दलित जीवन' का यथार्थ चित्रांकन हुआ है। गिरजा किशोर भारतीय समाज के इतिहास के सफल भोक्ता हैं। वे अपने जीवन में समाज के अनेक रंगों को बनते और बिगड़ते देखा है एक साक्षात्कार में उन्होंनें स्वीकारा है '' मै बराबर सोचता हूँ कि दलित अपने जीवन से काटकर हमने समाज का बहुत बड़ा नुकसान किया है। सवाल बचपन में मेरे दिमाग में रहा है। मै देखता था कि हमारे घर में महिलायें जब दलितों को खाने के लिए रोटी सब्जी देती थी तो उपर से डालती थी, यह बहुत अपमानजनक था। मुझे बुरा लगता था कि उनके हाथ में क्यों नहीं दिया जा सकता।

मैं जब पूछता था तो उत्तर मिलता था कि पाप लगता है, तब मैं कहता था किसी को रोटी देते छूने से पाप कैसे लग सकता है।

गिरिराज किशोर समाज की नब्ज को पहचानने में माहिर हैं। उनकी कहानी घोड़े का नाम घोड़ा का साईस नत्थू अपनी तुलना घोड़े से करता है। घोड़े की रोटी से अपनी भूख मिटाता है तथा स्प्रिट जो घोड़े के मालिश के लिये आती है। उसे पीता है – '' लम्बी थकान भरी यात्रा के बाद जब मालिक के हुक्म से घी पड़ी रोटी दी जाती तो वह उनमें से दो चार पार कर देता था मैं देख कर अनदेखा कर देता था। उसे नशे का भी शौक था। मालिश के लिये लाई गई स्प्रिट में से थोड़ी चुराकर पी जाता है।(6)

दलितों का सारा जीवन दूसरों की सेवा में ही गुजरता है। इसी कारण तो नत्थू अपनी तुलना घोड़े से करता है– ''हरमान तूँ समझता होगा नत्थू बहुत गंदा और लालची आदमी है। मै खुद मानता हूँ पर तू मुझे अपने जैसा समझ। बस फरक इतना ही है – मैं तेरी सेवा करता हूँ और तू मालिक का। मालिक का तेरा सीधा काम पढ़ता है। इसलिए वह तेरी मालिश करवाता है मेरे से नहीं पढ़ता है तो मुझे..... तूँ देख ही रहा है। पर मेरी नसें तो मर चुकी हैं तेरी अभी थोड़ी – थोड़ी फरकती है। वैसे हम तुम भाई– भाई।(7)

दलित वर्ण व्यवस्था के प्रारम्भ से आज तक अपने अधिकारों से वंचित रहा है। हो सकता है डेक तब भी जल रहा हो ' कहानी में दलित जीवन के समाजिक भेदभाव और यातनाओं को उद्घटित किया गया है। कहानी का शिक्षित पात्र 'राम निहोर राका' अपने इन्टरव्यू में पुछे गये के प्रश्न के उत्तर में अपने को रोक नहीं पाता है और उसका आक्रोश प्रकट हो जाता हैं।

व्हाट इज राका ? उसने हिन्दी में जबाब दिया सर, पूर्णमासी..... लेकिन हम लोगों के लिए तो यह आमावस्या है, नाइट विद आउट मून। हाऊ..... व्हाय..... वह एक मिनट के लिए झिझककर बोला सर हमने चाँदनी देखी ही नही सदियों से आमावस्या में जी रहें हैं।(8)

दलित समाज में आरक्षित व पिछड़ो की स्थिति और दयनीय है। वह इस युग में भी दलित होना ईश्वरीय कोप समझता है। वह मानता है कि किसी पूर्व जन्म का प्रतिफल है जिससे वह दलित है। गिरिराज किशोर की कहानी रघुनाथ कृपा इसी तथ्य को उजागर करती है। कहानी का पात्र रम्भे या रामेश्वर बड़े आस्था से कहता है कि'' यार इस देश की खूबी है देश चलता है। करने कराने की उसे चाह नहीं। इसे कहते हैं रघुनाथ कृपा। तुलसी दास महाराज ने जो रघुनाथ गुण गाया है कोई मुर्ख तो थे नही..... कभी– कभी जब देश में पाप बढ़ता है तो वे अपने भक्तों से कहलवाते हैं– अजगर करे न चाकरी, पंक्षी करे न काम, दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।..... दास मलूका का कहना मानों अपने घर जाओं अपने कर्मों को राओं मुझे माफ करों''।(9)

भारतीय समाज में दलितो की दोयम स्थिति रही है वह सदैव मान प्रतिष्ठा से वंचित रहा है। गिरिराज किशोर अपनी कहानी 'मै परशुराम नही है' की भगवती गंदी टोकरी नही उठाना चाहती है तो उसके पूरे परिवार को अपमानित किया जाता है– ''जिजमनियॉ कहती है कि बहू तो सबक आती है पर चौधराइन काफी..... अपनी बहू को पर्दे में छिपाकर रखे हैं कहीं हाथ लगे मैली न हो जाय ।(10)

सवर्ण समाज अवर्ण दलित समाज के शोषण का आदी हो गया है। उनकी कहानी' एक थी माँ' इसी यथार्थ को व्यक्त करती है– किसी के मरने से कोई नही मरता, इसकी माँ मर गई तो दूसरी माँ का नाम मिल जायेगा। बाप जिन्दा है तो लावारिस नहीं होगा, क्योंकि ऊँची जाति में बाप का पद किसी दूसरे को नहीं मिल सकता।(11)

'जमीन का टुकड़ा' कहानी दलितों के शोषण का यथार्थ अंकन करती जान पड़ती है। कहानी का पात्र' राम खिलावन को जब अपने आर्थिक शोषण का पता चलता है तो कहता है–'' एक बात उसके समझ मे आ गई थी छोटे लोगों की सेवा बड़े लोगों की रखैल है। रोटी कपड़ा दो और फीचों। उसकी किताबों में देने का हिसाब टेकता जाता है, लेने का पन्ना कोरा पड़ा रहता है। कहानी का राम खिलावन दलित समाज के शोषण के यथार्थ का प्रतीक है।(12)

आप की कहानी 'तारा द्वारा वापसी' की नीता महानगरी समाज के जीवन के बारे में अपने पत्र में लिखती है– 'जाति वर्ण आदि भेदों का जिक्र किया था। वहॉ कोई नहीं पूछता, कौन जाति धर्म का है। कुछ परिवार जरुर पुराने विचाार के हैं, अपने आप को मुख्यता देते है। आ बाकी सब ..... पति पत्नी भिन्न– भिन्न जातियों और धर्मों के होते हुए भी प्रेम का नाता मानते हैं..... यही बड़ी भारी बात है।(13)

डेक तब भी जल रहा हो' का संघर्षशील पात्र रामनिहोर राका साक्षात्कार के चेयरमैन से अपनी परेशानी और समाज व्यवस्था के बारे में प्रश्न पूछता है–'' अगर मैं किसी ऐसी लड़की से प्यार करूँ जो तथाकथित ऊँची जाति की हो तो क्या मुझे प्यार करने का अधिकार देंगे? छूट का यह कानून मेरी मदद करेगा?

तुम्हारा मतलब?

सर मेरा मतलब यही है। मुझे अपनी सीमाओं और ताकत को समझना होगा । अपने प्यार और अपनी जिदंगी के लिए कब तक इस समाज और नियमों का आश्रित बना रहूँगा? इस लिये मैं कहता हूँ मुझे किस्मत से दो – दो हाथ करने दो..... मै करुँगा जरुर करुँगा।(14)

इस प्रकार दलितों की भयावह भावनाओं को सामने रखकर उसके माध्यम से शोषण एवं जातियता की समस्या को सुलझाना, उन्हें उचित न्याय देना, इसके लिए अवितर संघर्षरत रहने की प्रेरणा देना जातिगत बंधनों से मुक्त कर मानवीय गरिमा को स्थापित करना, सवर्णो का अछूतों की ओर देखने का जो परम्परागत दृष्टिकोण हैं उसमें बदलाव करना तथा उच्च शिक्षा में फैली दलितों की अपमान के भावना का पर्दाफाश करना इत्यादि कई समस्याओं को आलोक में रखकर रची– वसी यह कहानियॉ साहित्य में मील का पत्थर हैं।

सन्दर्भ ग्रथ

1. वृहद हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद– षष्ठम् संस्करण पृ0 510
2. अंतिम दो दशर्को का हिन्दी साहित्य– डॉ0 मीरा गौतम पृ0159
3. दलित चेतना और समकालीन उपन्यास– डॉ0 मुन्ना तिवारी पृ0 5
4. कथाकार गिरिराज किशोर– डॉ0 सुरेश सदावर्ते पृ0119
5. दलित चेतना और समकालीन उपन्यास– डा0 मुन्ना तिवारी, भूमिका से,
6. सम्पूर्ण कहानियॉ – गिरिराज किशोर– खण्ड3(घोड़े का नाम घोड़ा) पृ0148
7. वही– 148
8. हमारें मालिक सबक मालिक– गिरिराज किशोर पृ073
9. सम्पूर्ण कहानियॉ – गिरिराज किशोर– खण्ड2(रघुराज कृपा) पृ0158
10. हमारें मालिक सबके मालिक गिरिराज किशोर(मै परशुराम नही) पृ033
11. सम्पूर्ण कहानियॉ गिरिराज किशोर खण्ड 1(एक थी माँ) पृ0 107
12. सम्पूर्ण कहानियॉ – गिरिराज किशोर खण्ड 4 (जमीन का टुकड़ा) पृ0 184
13. सम्पूर्ण कहानियॉ – गिरिराज किशोर खण्ड 1 (तार द्वारा वापसी) पृ0 49
14. हमारें मालिक सबके मालिक– गिरिराज किशोर पृ076